B.A. Part-III बक्सर का युद्ध : कारण एवं परिणाम/महत्व

डा० मिथिलेश कुमार
सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग
जे० एल० एस० कॉलेज, मुंगेर।

बक्सर का युद्ध, आधुनिक भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। इस युद्ध से अंग्रेजी सत्ता का बंगाल में पूर्णरूपेण अधिकार हो गया है। बक्सर युद्ध के बाद अंग्रेजी सरकार ने धीरे-धीरे पूरे भारत वर्ष को अपने अधिकार में कर लिया। प्लासी के युद्ध के पश्चात् मीरजाफर बंगाल का नवाब बना। मीरजाफर नाम मात्र का शासक था। वह एक कमजोर एवं अयोग्य व्यक्ति था। उसने कंपनी को बहुत अधिक धन/उपहार/रिश्वत आदि दिए, परंतु कंपनी की तरफ से धन की माँग बराबर बढ़ती ही गई, जिसे पूरा करने में वह अपने-आप को असमर्थ पा रहा था।

ज्ञातव्य है कि मीरजाफर के समय में प्रशासनिक व्यवस्था भी नष्ट होने लगी। पूर्निया, पटना, मिदनापुर, ढाका इत्यादि जगहों पर विद्रोह होना प्रारंभ हो गए। जब तक क्लाइव भारत में रहा उसने मीरजाफर को सहायता एवं संरक्षण प्रदान किया। क्लाइव की जगह क्रमशः हॉलवेल्स और वेन्सिटार्ट गवर्नर बने। इन लोगों ने भी नवाब पर रुपये के लिए दबाव डालना प्रारंभ किया।

बक्सर युद्ध :→ कारण :→

ईस्ट इंडिया कंपनी मीरजाफर से नाराज थी - इसका कारण था ईस्ट इंडिया कंपनी का ऐसा विचार था कि मीरजाफर उन्हें कंपनी के दुरुपयोग से बंगाल में अंग्रेजों के बढ़ते प्रभाव में कटौती करने की कोशिश कर रहा था। अंग्रेजों की लगातार बढ़ती माँगों को पूरा करने में मीरजाफर विफल रहा था।

अंग्रेजों ने षड्यंत्र कर उसे गद्दी से हटाने की योजना बना ली। अंग्रेजों ने उसके दामाद मीरकासिम से एक गुप्त समझौता कर लिया। उसने कंपनी को नई सुविधाएँ देने एवं

उसकी धन की माँग को पूरा करने का वचन दिया।
14 October 1760 की रात्रि में राजधानी में
मीरजाफर को घेर लिया। उसे बाध्य होकर गद्दी
छोड़नी पड़ी। उसे 15000 (पन्द्रह हजार) रुपए
मासिक पेंशन दिया जाने लगा तथा वह मुर्शिदाबाद
छोड़कर कलकत्ता चला गया। मीरकासीम अब
नया नवाब बना।

मीरकासीम और ईस्ट इंडिया कंपनी का संबंध :-

मीरकासीम मीरजाफर से ज्यादा
योग्य और कुशल था। उसके पास प्रशासनिक
अनुभव भी था। अपने पूर्वाधिकारियों की भाँति
ही, मीरकासीम को भी अंग्रेजों को भारी धन
की अदायगी करनी पड़ी। इसके अतिरिक्त
उसने वर्द्धमान, मिदनापुर तथा चिटगाँव के तीन
जिले अंग्रेजी कंपनी को दे दिया। मीरकासीम
बंगाल की स्थिति को सुधारने के लिए उसने
अपने आपको अंग्रेजो के चंगुल से मुक्त करना
चाहा। इसके लिए उसे सेना एवं धन की आवश्यकता
थी।

मीरकासीम ने निम्नलिखित
कार्य किए - कलकत्ता में स्थित कंपनी से सुरक्षित
बनाये रखने के लिए अपनी राजधानी को
मुर्शिदाबाद से मुंगेर (बिहार) कर लिया। अपने
पसंद के अधिकारियों के साथ उसने नौकरशाही
का पुनर्गठन किया। सेना के कौशल तथा
क्षमताओं को बढ़ाने के लिए उसका सुधार किया।
सेना को यूरोपीय ढंग से प्रशिक्षित किया।
मुंगेर की सुरक्षा की व्यवस्था की गई तथा वहाँ
पर बंदूक और तोप बनाने का कारखाना खोला गया।
भ्रष्ट अधिकारियों/कर्मचारियों से राजकीय
धन वसूल किया तथा अतिरिक्त कर लगाया।

मीरकासीम अपनी आर्थिक क्षति, अपने अधिकारियों की उपेक्षा तथा अंग्रेजों द्वारा बंगाल की प्रजा के लूट-खसोट से उब चुका था। तंग आकर उसने देशी व्यापारियों को भी निःशुल्क व्यापार करने का अधिकार प्रदान कर दिया। यद्यपि मीरकासीम का यह कदम पूर्णतः न्यायोचित था, परंतु इससे अंग्रेजों के 'दस्तक' का दुरुपयोग कर धन कमाने का अवसर बंद हो गया।

क्रोधित होकर अंग्रेजो ने सैनिक कारवाई की योजना बनाई। 25 मई 1763 को कंपनी की तरफ से 11 सूत्री माँगे नवाब के सामने रखा। नवाब ने इस माँग को ठुकरा दिया। इस बीच पटना के अंग्रेज एजेंट एलिस को कलकत्ता कौंसिल ने नगर पर आक्रमण करने का आदेश दिया। एलिस ने 24 जून, 1763 को पटना पर अधिकार कर लिया। मीरकासीम को इस घटना की जानकारी हुई तो उसने पटना पर आक्रमण कर उसपर अधिकार कर लिया। अनेक अंग्रेज मारे गए।

दूसरी तरफ मेजर एडम्स के नेतृत्व में एक सेना मुर्शिदाबाद की तरफ बढ़ी। मीरकासीम भी मुंगेर चला गया। मार्ग में अनेक स्थानों पर जैसे- करवा, गिरिया तथा खुदी में अंग्रेज नवाब की सेना को पराजित किया। अंग्रेजो ने जुलाई, 1763 में मीरकासीम को अपदस्थ कर फिर से मीरजाफर को नवाब बना दिया। मीरकासीम के अधिकारियों की गद्दारी की वजह से मुंगेर और पटना उसके हाथ से निकल गए। उसे दिसंबर, 1763 में अवध में शरण लेनी पड़ी।

बक्सर का युद्ध (22 October 1764):-

कम्पनी तथा नवाब मीरकासीम में युद्ध 1763 में ही आरंभ हो गया था। कई लड़ाई में मीरकासीम को

हार का सामना करना पड़ा। मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय तथा अवध के नवाब शुजाउद्दौला से मिलकर अंग्रेजो को बंगाल से बाहर निकालने की योजना बनाई। इन तीनों की सम्मिलित सेना जिसमें 40 से 50 हजार के बीच सैनिक थे। ~~सेना के बीच मुकाबला हुआ~~ इसका मुकाबला ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना से हुआ। ईस्ट इंडिया कंपनी की कमान मेजर हेक्टर मुनरो के हाथ में थी। कंपनी की सेना में मात्र 7027 सैनिक थे। 22 अक्टूबर 1764 को बक्सर में युद्ध हुआ। मेजर हेक्टर मुनरो के नेतृत्व मे अंग्रेज वीरतापूर्वक लड़े।

मीरकासीम युद्ध क्षेत्र से भाग गया, उसकी स्थिति दयनीय हो गई। घुमक्कड़ जीवन व्यतीत करते हुए, दिल्ली के निकट 1777 ई० में उसकी मृत्यु हो गई। मुगल सम्राट ने अंग्रेजो से समझौता कर लिया। नवाब शुजाउद्दौला कुछ दिनों तक अंग्रेजो का विरोध करता रहा, परंतु कारा के युद्ध में पराजित होने के पश्चात् मई 1765 मे उसने भी अंग्रेजो के समक्ष घुटने टेक दिए।

बक्सर युद्ध के परिणाम/महत्व

बक्सर के युद्ध ने प्लासी के निर्णय पर मुहर लगा दी। बंगाल में अंग्रेजी सत्ता की स्थापना का कार्य इस युद्ध मे पूरा कर लिया। बंगाल की गद्दी पर ऐसा नवाब आया जो अंग्रेजी की कठपुतली था।

अवध के नवाब और मुगल सम्राट की पराजय ने ईस्ट इंडिया कंपनी को उत्तर भारत की सर्वश्रेष्ठ शक्ति

5

के रूप में स्थापित कर दिया। अब उसकी सत्ता को चुनौती देने वाली कोई शक्ति नहीं बची।

इलाहाबाद की संधि (1765 ई०) के अनुसार अवध के नवाब शुजाउद्दौला ने मुगल सम्राट शाहआलम-द्वितीय को इलाहाबाद तथा कारा के जिले दिए तथा हर्जाना के रूप में 50 लाख रुपए कंपनी को देना स्वीकार किया साथ ही अंग्रेजी सेना का खर्च देने को भी राजी हुआ। शाहआलम द्वितीय ने इन जिलों के बदले बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा की दीवानी कंपनी को सौंप दिया। वह अब कंपनी का पेंशन भोगी बनकर रह गया।

बक्सर के युद्ध में विजय ने अंग्रेजों के आत्मविश्वास में काफी वृद्धि किया। अब वे संपूर्ण भारत पर दावा करने लगे थे। इलाहाबाद तक का प्रदेश अंग्रेजों के हाथों में आ गया तथा दिल्ली का मार्ग खुला था। बक्सर के युद्ध में अंग्रेजों की सफलता ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत के अन्य भागों में ब्रिटिश शासन की स्थापना बहुत दूर नहीं थी।

—x—

Scanned with CamScanner